

दिव्य
हस्तलिखित
संकेत



= बात यह है कि उदयोवर्ण पहले एक महाकान्तेयुध
 कि एक गुप्त निरीखनी भी, जिसका जिव
 में कलुषाहं। उन्हे श्रीपालीला प्रविष्ट एक
 वरुण के लिये हुए का ताका लाया उका को उन्हे
 उन्हे वदे बातें सुन्नी भी ~~का~~ में पन ही
 मानलोयों को दिन लायेगे - का उन्हे पर
 लब्ध लिला उका - पर पत्र काय
 रिती को भी का दिनाह भोग / नू भी नही
 दिनाह का वाणह, ताका उन्हे वदे को
 व्यभिचो के जिहरे, ताका एक के को
 काणो से भी नही दिखला रहें। को पति पाहो
 काणो के समान उन्हे में किये निजवर्ण को
 प्रकाश के साथ एकादि के लोचन गले-मरे
 मेरे मरे एक इलीजवा संयोग लगा ला, काय
 सिद्धे रहे, कायही सुन्दर रही लो किय
 ही सवगीह काय काय जलवा मेरे मरे
 निल गले को कायलाये को दिखलाह
 अहं, लो मेरे लवदासिब साव के काय
 में में पर समझाह कि के उन्
 महाका का प्राप्ति उन् समय उका होगा
 जय हाह सकन दिल्ली के नका पाहो
 उन् जय उन्हे पर प्रथा - कि काय
 श्रीमन्माल जी हं ६० मान उका जी के
 निमम में वतालाहें (चतु से वदे उन्हे के
 वारे) इन्हे उन् में जो उन्हे कथ को पर
 हं (ने हंके लगे के को-बाले) काय
 मेरे परीक्षा ले रहे हैं, काय लो माने ही है
 कि हुमान प्रकाश का सुदृश्यही न निलकुल
 श्री प्रिया श्री का लक्ष्य होगा है। ॥

= जय मोरी लिला, कन भी सुखी
 को से इन् बात को समझने की इच्छा

= जगत भर में कि डेट को नहीं पहचाने हब मराने मुझे
 कि हब गुप्त निहीर जलानी थी, जिसका जिव-
 में का जुबाई / उते श्री पालीला प्रसिद्ध हब-
 नडा जिनके हब का तादात्म्य उका भो उखेने
 उते वडे वारे प्रसी/भी ~~का~~ में नन ही
 मानलोगे वो दिन लायेगे - वा उते में हब-
 लखट लिलान उका हब - हब पत्र जलन
 बिही को भी मार दिगह भोग / हब भी नही
 दिनाके वा वाणार, जिहा उते वडे को
 व्यभिचारे के जिगरे, ताका हब को कोरे
 काणों से भी नही दिगलता रहें / को मारि फाटो
 प्राणी व संकन उते में हबने निजकर्मको
 पुलवा के साध एकाहो मदि वे नोन गये-लगे
 मेरे मने हब इलीजवा संयोग लगा रह. काय
 जिगे हब, कायनी इच्छा रही ले मिला
 ही सनसीही कायना कागे, जलवा कोरे मने
 जल गदि कोरे कायलोगे को दिगलता रहें /
 कोरे हब को ऐतदासिक ताव वे कायना
 वा में हब समझा हब कि के उते
 मराना का प्रादुर्भाव उते समय उका हो गा
 गुप्त शाह बनना दिल्ली के राजा पर फा-
 = उते जल उखेने हब प्रच्छा - कि काय
 श्री गुरुमाल जी-हब, हब मान उताप जी वे
 निमप में वतालाइये / ननुत से वडे उखेने के
 वारु इतने उता में जो उखेने कडा का नद हब
 हब (ने हबने जगे के को-बाले) काय
 मेरी मरीका ले रहे हब, काय ले मानने ही हब
 कि हबमान प्रताप का सुदुर्गुहाही व निलकुल
 श्री प्रिया जी का लखन होगया हब / ॥

= ~~काय कोरे निमप~~ काय में इच्छा
 कोरे से इत बात को समझने की इच्छा

महजनोंके • भावोद्गार

महाभावकी जो अगले स्तरकी चीज है जिसकी रूपरखा जीव गोस्वामी प्रभृति रसमर्मज्ञोंने भी नहीं खोजी, वैसे चीज बाबामें व्यक्त हुई है। इनका काष्ठ मौन असलमें इनका रस-समुद्रमें निमज्जन है।

-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

राधाबाबा प्रेम, भक्ति और सत्यका प्रतीक। भक्ति मार्गकी जीवन्त मूर्ति। एक स्थिति है, जहाँ ब्रह्म सिवाय और कुछ भी नहीं। द्वैत, अद्वैत, ज्ञान, भक्ति सब एक ही हैं। वही है, जो स्थिति राधाबाबाकी है।

- श्रीआनन्दमयी माँ

श्रीराधाबाबा मणि हैं, प्रकाश हैं, शोभा हैं। श्रीराधाबाबा मेरी आत्मा हैं।

-श्रीश्रीयोगिराज ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा

"ज्ञानंहु संत अनंत समान" यह मन्त्र सत्य ही प्रतीत होय है श्रीप्राणनाथकी लीला देख के तथा सुन के बड़े बिज लोग हैं आश्चर्यमें पर जाय है कारण कि बिचारी बुद्धिकी वहाँतक गम्य नहीं एवमेव संतनकी लीला है श्रीभगवल्लीलाके समान ही विचार राख्य सौ पर कि बात बन जाय है बात स्पष्ट है सब ही शरीरतक ही सोच विचार सकें है यहाँ देहाध्यास रहे ही नहीं यह सत् श्री जीवन धन लीलामें निमग्न रहे हैं। मुक्त पुञ्ज बाबा (श्री श्रीराधाबाबा)के विषयमें तो कुछ कहते ही नहीं बने "मन सतेत जेहि जान न बानी...."

-पूज्य पंडित श्रीगयाप्रसादजी 'सचल गिरिराज' गोवर्द्धन

राधा बाबाको अगर कोई एक-एक लक्षण पर परखे तो उनको सौ टंच खरा पावेगा। मुझे अगर एक विशेषणसे ही राधा बाबाकी परिभाषित करना हो तो मैं उनको कहूँगा—'विशुद्ध संत'। तुलसीदासने भी संतके लिये यह विशिष्ट विशेषण शायद एक ही बार प्रयुक्त किया है :—

संत विमुद्ध मिलहिं परि तेही । राम कृपा करि चितवहिं जेही ॥

रामने अगर कृपाकर मेरी ओर देखा तो उसका एक मात्र सबूत मेरे लिये यही है कि राधाबाबा मुझे मिले।

-कविवर डा० हरिवंश राय 'वचन'